अब नहीं इतना संवरना चाहिए

- डॉ. सुशील गुरू

भोंर का तारा निशा की गोद से आया निकलकर।
पूर्व में ऊषा क्षितिज पर आ गई सजकर संवरकर।
आप ऊषा है, किरण अनुंगामिनी,
आप संध्या है निशा अनुरागिनी,
सूर्य का यह रूप दर्पण में उभरना चाहिए।
आपको कुंकुंम सजाकर,
रश्मि का लावण्य लेकर,
रूप की गंगा लिए जल पर बिखरना चाहिए।
दूधिया चन्दन अबीरी हो गया है,
अब नहीं इतना संवरना चाहिए।

दिवस ने लघु सूर्य को मेंहदिया हथेली पर उठाया,
और दिनकर ने अनवरत साधना का गीत गाया।
आप शक्ति त्याग की हैं मूक प्रतिमा,
आप भक्ति प्रणय का है एक सपना,
ज्योति का प्रतिबिम्ब बनकर बसर करना चाहिए।
आपको पायल पहनकर,
प्रीति की पावन शिला पर,
प्रभा की तरह पुलकभर शयन करना चाहिए।
अधर का छूना अशरीरी हो गया है
अब नहीं इतना संवरना चाहिए।

शून्य सी दोपहर, महुआ गंध सी उतरी धरा पर, मोरनी ने बदन पर खींची रंगोली खिलखिलाकर। आप घर हैं सूर्य की अनुपमेय रचना,
आप वर हैं ज्ञान का संदीप गहना,
धरा की महकती सुरभि बनकर बिखरना चाहिए।
आपको बिछिया पहनकर,
पॉव आलता से सजाकर,

चॉदनी के द्वार पर कुछ पल ठहरना चाहिए।
धूप का घटना जरूरी हो गया है,
अब नहीं इतना संवरना चाहिए।